॥ श्रीः ॥

चिकित्साधातुसार ।

श्रीमद्वैद्यराज दिलेरामभ्रातृज श्रीकृष्ण-
शास्त्री विरचित.

वह

लाहोर संस्कृत पुस्तकालय व्यवस्थापक
लाला मेहेरचंदकी आज्ञासे

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने
अपने
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया.

शके १८२०, संवत् १९५५.

कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

चिकित्साधातुसार.

श्रीमद्वैद्यराज दिलेरामभ्रातृज श्रीकृष्ण-
शास्त्री विरचित.

वह

लाहोर संस्कृत पुस्तकालय व्यवस्थापक
लाला मेहेरचंदकी आज्ञासे
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने
अपने
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया.

शके १८२०, संवत् १९५५.

कल्याण–मुंबई.

॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

अथ

चिकित्साधातुसारः।

त्रैलोक्यत्राणनिरतं वासुदेवं परात्परम्॥ परं ब्रह्म स्वयंज्योतिः परं धाम नमाम्यहम् ॥१॥ यत्कृपातः परं ज्ञानं प्राकृतं वैदिकं तथा॥ जायतेऽशेषसम्पत्तिस्तं गुरुं प्रणमाम्यहम् २ सद्वैद्येभ्यः श्रुता ये च ये च ग्रन्थेषु विश्रुताः॥ प्रकारास्ते प्रदर्श्यन्ते धातुशोधनमारणे॥३॥

दोहा–निजजनपालक सुखसरित् वासुदेव परधाम । वन्दहुं चरणसरोज तहं सुफल होइ सभ काम ॥ १ ॥ शोधन मारण धातको लिखो पढो सभ कोय । निज अनुभव कीनो नहिं ताफल कछु ना होय॥ २ ॥ भस्मरूपलख धातको मरा कहें सब कोय । पुट औषधकें योगसे जुदो जुदो फल होय॥

बहुत लोग जडीबूटीमें और लघुपुटसे

बनी हुई धातुको अच्छा समझते हैं परन्तु चिकित्सकजन इस बातको अंगीकार नहीं करते क्यों कि चांदी सोने आदि उत्तम वस्तुको फूंककर केवल भस्म (राख) बनानेसेही कुछ फल नहीं होता किंतु यदि वह भस्म और औषधियोंकी अपेक्षा थोडी (चावल परिमाण या रतीपरिमाण) खुराकसे थोडे दिनोंमें बहुत दिनोंके असाध्य रोगोंकोभी दूर करे और बल वी-र्य्यको बढाकर शरीरकी कांतिकोभी चम-कावे तब यह परम रसायन है; और जो लोग चांदी सोना बनानेको रसायन कहते हैं वे लाखको राख करते हैं क्यों कि चर-कमें कहा है कि " रसायनं तु तद्विद्यि यज्जराव्याधिनाशनम् " अर्थ इसका यह है कि जो जरा अवस्था (बुढेपा) और व्या-धि (रोग) को नाश करे उसको रसायन जाने; वह चाहे बूटीसे बना हो या धातुसे ब

ना हो इसमें कुछ प्रयोजन नहीं केवल गुण देखना चाहिये और यहभी देखना कि वह कच्चा न हो क्योंकि कच्चा धातु विष है और वही शुद्ध मरा हुआ अमृत है और जो लोग धातुको खिलाकर उसी समय अंगगौरव आदि चमत्कार दिखाते हैं उसमें यह कारण है कि विशेषतः ऐसे धातुओंमें कच्चे विषका योग होता है और वह आपभी कच्चा रहताहै खानेके समयही नाडी २ में प्रवेश होकर अंगोंको तोड देता है और पीछे गरमी खुस्कीकर हृदयको फूंक देता है कुष्ठ आदि रोगोंको करता है और जो अच्छी रीतिसे शुद्ध होता है वह गंभीरतासे शनैः२ गुण करता है हानि कुछ नहीं करता इसलिये धातुओंको विचार कर बनाना और देना चाहिये रोग और छःदोष (वात आदि) की परीक्षा अच्छे प्रकार करनी चाहिये।

अथ धातुओंके नाम "स्वर्णं रूप्यं च ताम्रं

च रङ्गं जशदमेव चासीसं लौहं च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः॥ १ ॥ ” अर्थ—सोना १ चांदी २ तांबा ३ वंग ४ जिस्त ५ सिक्का ६ पुलाद ७ ये ७ धातु हैं और पर्वतमें उत्पन्न होते हैं और ये शुद्ध बने हुए बालि और बुढेपा, कृशता, निर्बलता और कई प्रकारके रोगोंको दूर कर शरीरको धारण करते हैं इसलिये इन्हें धातु कहते हैं और ग्रन्थोंमें इनकी उत्पत्ति और रीतिसेभी लिखी है परंतु इस विषयमें उससे कुछ प्रयोजन नहीं इस कारण उनका लिखना यहां अनावश्यक समझकर छोड दिया है ।

अथ स्वर्णपरीक्षा ।

दाह करनेसे लाल रंग हो काटनेसे श्वेत रंग हो और घिसौटीपर घिसानेसे कुंकुमकीसी रेखा प्रगट करे और जिसमें चांदी तथा तांबेकी मिलावट न हो स्निग्ध और नर्म हो और गुरु (भारी) हो इतने गुण

जिसमें पाये जावें वह सोना शुद्ध जानना ।
और जो कठिनतासे छेदन हो रूखा (नर्म न हो) दाह करनेपर श्वेतवर्ण उत्पन्न करे घिसौटीपर घिसानेसे श्वेतरंग अथवा पीतल जैसी रेखा पडे लघु (अर्थात् बोझल न हो) और जो फूट जावे (अर्थात् घनकी चोटको न सह सके, और रेतेकीसी डलिऐं होकर खिंडने लगें) और जो समल (चांदी तांबेकी मिलावटवाला हो) और दल (जिसे लोकमें जोर या दोईत कहते हैं) हो ऐसा सोना अशुद्ध होनेके कारण मारनेके योग्य नहीं होता लोगव्यवहारमेंभी यही परीक्षा है ।

अथ शुद्ध सोनेके गुण ।

स्वादु है तिक्तताको लेकर कुछ कसैला है और पाकमें (परिपाकदशामें) स्वादु है और चिपचिपाटवाला है और मांसवर्द्धक है पवित्र है नेत्रोंको हित है मेधा और स्मृति-

को बढाता है हृदयको प्रिय है आयुः कान्ति वाक्शुद्धि स्थिरता इनको करता है और जंगमस्थावर विषोंको, उन्माद, त्रिदोष ज्वर, शोष रोग इनको जीतता है और यह अशुद्ध हो तो बलवीर्य्यको नाश करे शरीरमें अनेक प्रकारके रोगोंको कर सुकावे और सदा दुःखी रक्खे मृत्युको प्राप्त करे मरनेमें न्यूनता (कच्चा) हो या विरुद्ध रीतिसे मारा हो तभभी यही दोष करे इसलिये अच्छी प्रकार यत्नसे मारना चाहिये इस रीतिसे और धातुओंमेंभी विचार कर लेना चाहिये ।

अथ स्वर्णशोधन।

सोनेका सूक्ष्म पत्र कराय अग्निमें तपाकर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र कुलथीका काढा इन ५ वस्तुओंमें ३ वार बुझावे तब सोना शुद्ध हो इसी प्रकार और धातुभी शोधने ।

अथ मारण ।

सोनेसे दूना शुद्ध पारा लेकर दोनोंको खटाईके साथ खरल कर गोला बनावे फिर इन दोनोंके बराबर शुद्ध आमलेसार गन्धक लेकर नीचे ऊपर दे सराव (मिट्टीकी ठूठिओं) में धरके कपरोटी कर गज पुट दे इस रीतिसे ४ पुट दे तब सोना चोखा होय १।

अथवा सोनेका १६ भाग सिक्का डाले फिर दोनोंको खटाईमें खरल कर पीछेसे गोला बांध गोलेके बराबर गंधक नीचे ऊपर देकर ठूठियोंमें संपुट कर गज पुट दे इस प्रकार ७ पुट दे तो सोना मरे २।

इसी प्रकार संखिया और हरितालके योगसेभी १४ पुटमें सोना मरता है परन्तु इसमें ४ पुटपर्यंत सोनेसे आधा संखिया और दूनी हरताल डालता जावे प्रत्येक पुटमें संखियेको निकालता जावे ७ पुटके अनं-

तर समान हरिताल पावे तब सोना अच्छा बने। कुष्ठ, वात, रक्त, फिरंग, शीतज्वर, तृतीय, चातुर्थिक, रुधिर दोषको दूर करे मान १ रत्ति ३।

रांग १ पैसाभर शीसा १ पैसाभर सोना १ पैसाभर लेकर नये ठीकरेमें चूल्हेपर चढाय नीचे कीकरकी लकडीकी आग जलावे और उनमें सुहागा नसादर डाले ऊपर अंगार रक्खे जब तीनों पिघल जाय तब अंगारोंको दूर कर विसखपरा (जो इटसिटका भेदही एक औषध है) उसके छोटे २ खंड (टुकडे) डालता जाय और करछीसे चलाता रहे जब वह भस्म हो तब एकत्र कर दाब रक्खे शीतल होनेपर उतारे फिर २ या ४ पुट त्रिफलाके देकर राखे एक रत्ति पानके साथ खाय तो दाह जाय धातु बढे।

अथ सोनेके खानेकी विधि।

१ रत्ति सोना लेकर उसमें २ तोला एला-

यची १ पीपल २॥ टंक सहत मिलाय खाय तो खांसी, श्वास, क्षई, अरुचि आदि सभ रोगोंको दूर करे २ महीने खानेसे शरीर पुष्ट हो पथ्य रक्खे खटाई कच्ची मिठाई रूक्षवस्तु आदि नहीं खाय । इस प्रकार जो औषध जिस रोगको दूर करती है उस रोगमें उसी औषधके अनुपानसे सभ धातुरोगके अनुकूल समझाके खावे । धातु १ संयोगी औषध २ जिसके योगसे मारा है । अनुपानकी औषध ३ देश ४ काल ५ रोग ६ उसीका बलाबल ७ ये सात बातें विचार कर यथायोग्य वैद्यको धातु आदि औषध वरतने चाहिये औषध खानेके अनन्तर ४ दशाओंमें कोई एक दशा होती है रोगकी अधिकता १ या न्यूनता २ समता ३ रोगनिवृत्ति ४ इस लिये विचारना चाहिये कि औषध खानेसे कौन दशा हुई यदि रोगकी अधिकता हो तो पूर्वोक्त बातोंसे दोषका बल विचार कर

इसके अनुकूल योग या वियोग करके चि-
कित्सा करे अथवा रोगका फिर निर्णय करे
यदि न्यूनता हो तो औषध अनुकूल समझे
और उसीसे चिकित्सा करता जावे । जब
रोग निवृत्ति हो तो आगेके लिये रोग और
औषध स्मरण रक्खे फिर समय देख वरते
इसीको अनुभूत औषध कहते हैं यदि समता
हो तब औषधको कुछ अनुकूल कोटीमें
समझे पूर्वोक्त ७ बातोंको विचार कर योग
वियोग करे या मात्रा बढावे यदि फिर गुण
न करे तो और (अन्य) औषध करना
चाहिये यह प्रकरणसे संक्षेप करके औषध
भक्षणविधि लिखी है ।

अथ चान्दीके लक्षण और गुण कहते हैं

गुरु (बोझल) स्निग्ध (जो रूक्ष न हो) मृदु
(कोमल) दाह और छेदनमें श्वेतरंग घन
चोटको सहारे (फिरे नहीं और न्यूनभी
हो) सोने आदि और धातुओंकी मिला

न हो ऐसी स्वच्छ चांदी मारनेके योग्य है ये लक्षण शुद्ध खुरस चान्दीमें है और जो कठोर दोइत (जो दो धातुओंसे बनती है) रूक्ष (रूखी) लाल वा काले पीले रंगकी चमकवाली, लघु और काटने कूटने फूकनेसे नष्ट हो जावे वह चांदी अच्छी नहीं ।

अथ गुण ।

चांदी शीतल है स्वादमें कषैली और खट्टी है पाकमें मीठी है और रेचनी (मलको बाहर कर कोष्ठ शुद्ध करनेवाली है) अवस्थाको स्थापन करनेवाली है नेत्रोंको हित है वात पित्त प्रमेह आदि रोगोंको दूर करती है स्निग्ध है और यह जो अशुद्ध हो तब शरीरमें ताप, बलवीर्य्यका नाश, पुष्टिकी हानी, और कुष्ठ आदि महारोगोंको करती है ।

अथ चांदीकी शोधनविधि ।

यह तो सोनेकी रीतिसे करनी ।

अथ मारण ।

१ भाग चान्दी १ भाग पारा २ भाग गंधक ले फिर पारे गन्धककी कजली करे फिर सूक्ष्म चांदीके पत्रोंके नीचे देकर कूजेमें संपुट कर १० सेर गोहेकी अग्नि दे इसी रीतिसे करता जावे जब निश्चंद्र हो और जलमें तरे तब शुद्ध जानो मात्रा इसकी एक रत्ती है ४ मासे इलायचीदाना और मिसरी ले मखनीसे मिलाकर खावे।उन्माद, शिरोरोग, प्रमेह, तप रोग, पित्तज्वर, गरमीके सभ रोग जावे पुष्टिकर सतावर आदिके योगसे खावे तो बल वीर्य्य बढे भूख लगे १।

द्वितीय विधि २।

छोटी दूधी (दोधक) जिसे लोकमें हजारदानीभी कहते हैं इसके तोडनेसे दूध निकलता है इसके रसमें चांदीके पत्रको

गरम कर ७ वार बुझावे फिर इसके गुद्देमें रख कर ४ पाथियोंमें अग्नि दे इस प्रकार ७ वार करे फूलकर खील हो जावेगी फिर खरल कर इसी बुटीके रसमें २ लघु पुट दे अनुपान इलायची सहत और यथारोग अपनी बुद्धिसे विचार लेना।

तृतीय विधि ३ ।

पारा चांदी दोनोंको बराबर ले फिर इनको तेलमें मट्ठेमें गोमूत्रमें कांजीमें कुलथीके क्वाथमें शोधे फिर त्रिफलेके क्वाथमें शोधे फिर दोनोंको खरलमें जबतक एकरूप न हो तबतक घोटे फिर गन्धक हरताल ये दोनों बराबर ले निंबूरसमें सभको मिलाकर घोटे ठूठीमें संपुटकर ४ पुट देकर फिर सिद्ध हो अनुपानसे वरते।

अथ चतुर्थ विधि ४।

सोनामक्खी २ तोले लेकर महीन पीसे फिर चांदीके नीचे ऊपर देकर कुज्जेमें संपुट

कर २० सेर गोहेकी आग दे वह जब शीतल हो तब निकाले फूलकर खील हो जावेगी ४ पुटमें, अनुपानसे देनी गुण बहुत करे ।

अथ पञ्चम विधि ५ ।

६ तोले देशी जुवायण लेकर १ तोला चान्दीके नीचे ऊपर देवे फिर बडी दो पाथियोंमें देकर गोबरसे लीपना फिर सुकाकर आग देवे इस प्रकार १२ पुट देनी चांदी अच्छी बने अजीर्णादिकको अनुपानसे दूर करे ।

अथ छठी विधि ६ ।

बला (खरहटी) जिसे तूंतीभी कहते हैं इसके पत्ते सूंत जैसे होते हैं इसके गुद्देमें रुपैया रखकर गज भर गढेमें रखनी नीचे ऊपर पाथियें भर निर्वात स्थानमें आग देवे शीतल हो तब निकाले खील हो जावेगी ।

अथ सातवीं विधि ७ ।

सिंगरफ २ तोले लेकर गिद्दड तमाखूकी

जडके रसमें १ प्रहर खरल करे फिर १ तोला चांदीके पत्रपर लेप करे फिर इसीकी जड-का गुद्दा ले उसमें देकर ३ सेर पक्के वस्त्रख-ण्डों (चीर) से लपेटकर एकांत अग्नि देवे जब शीतल हो तब निकाले तोल भारी हो जावेगा तब उसको पीसकर कुज्जेमें धर ५ तोले मलाई डाल मन्द आगमें पकावे जब सहजसे मलाई खपजावे तब सुकायकर पीस लेना मात्रा (खुराक) चावल मखनी-सहत आंवलेका मुरब्बा यह अनुपान है भूख बहुत लगे यदि भूख शान्त न होवे तो घी दूध पिलावे यह बहुत अच्छी रीति है सभ गुण इससे होते हैं ।

अथ ताम्बेके लक्षण ।

जपाके फूलके समान जिसका रंग हो स्निग्ध और कोमल और घनके सहारनेवा-ला, लोहा और सिक्का जिसमें न मिले हों ऐ-सा ताम्बा मारने योग्य है और जो काला

रूखा अति कठोर या श्वेत और घनको न सहारनेवाला हो, लोहे और सिक्केकी मिलावट हो ऐसा ताम्बा योग्य नहीं ।

अथ गुण ।

ताम्बा कसैला और कुछ खट्टा मीठा है और पाकमें कटु है पित्त कफ इनको हरता है और शीतल है नेत्रोंको शोधन करनेवाला है और रेचन है और यह शुद्ध मरा हुआ पांडु उदर अर्श (बवासीर) ज्वर कुष्ठ कास श्वास क्षय (खई) पीनस (रेजस) अम्लपित्त (जिसमें अन्नका पाक मन्द होता है खट्टी डकारें आती हैं भूख नहीं लगती नीचेसे अथवा ऊपरसे कच्चा अन्न गिरता रहता है) शोजा कीडे शूल इनको दूर करता है और मांसवर्धकभी है और जो यह शुद्ध न किया हो अथवा अच्छी प्रकार न मरा हो तब विषसेभी अधिक दोष करता है क्यों कि विषमें तो केवल मारण (मार देना) यह ए-

कही दोष है परन्तु अशुद्ध और कच्चे तांबेमें दाह १ (अंगोंमें अग्निकी चोष लगनी) स्वेद २ (पसीना) अरुचि ३ (खानेकी इ-च्छा न होनी) मूर्छा ४ आवे उत्क्लेद ५ गाल विरेचन हो ६ उद्वमन ७ (उलटी) हो भ्रम ८ (चित्त ठिकाने न हो) ये ८ दोष हैं इस लिये तांबेको अच्छी प्रकार शोधे और मारे।

अथ शोधन।

तास्बेके अच्छे पत्र कराकर २ प्रहर गोमूत्रमें अग्निसे पकावे फिर तेलमें तक्रमें कांजीमें कुलथीके काढेमें ७ वार बुझावे फिर गरम जलसे धोवे तब तांबा शुद्ध हो।

अथ मारण।

ताम्बेके चोखे पत्र बनाकर फिर दूनी सोनामक्खीको पीसकर पत्रोंके नीचे ऊपर देकर ठूठियोंमें सम्पुट कर गजपुटमें आग दे फिर घीकुमार और त्रिफला इनकी ३ पुट दे तब तांबा अच्छा बने १ रत्ती नित्य

महीने पर्य्यन्त खाय तो बलवीर्य्य पुष्टिको बढावे नपुंसकता दूर करे अनुपान मखनी मिसरी और अपनी बुद्धिसे यथायोग्य अनुपानसे दे और जिन रोगोंपर इसका देना पहिले गुणवर्णनमें लिखा है उनमेंभी देना।

अथ द्वितीय विधि २।

चोखे पैसेको लेकर पूर्व रीतिसे शोधे फिर उसके बराबर कलीका पत्र बनाकर और पैसेके नीचे ऊपर लपेट देना और २ पैसे भर दोधक जिसका लाल दूध है उसको लेकर पैसेके नीचे ऊपर दे १ सेर पक्के वस्त्र खण्ड (लीर) लेके उनमें लपेट फूंक देवे शीतल हो तब निकाले रंग श्वेत होवेगा फिर दोधकके रसमें खरल कर ३ पुट दे फिर ३ पुट त्रिफलेके दे फिर चोखा बने १ चावल ३ मासे बावची पीसकर उसके साथ कुष्ठीको देवे ४० दिन और ५ माषीका जल

(सरबत) करके साथ पिलावना इससे उद्गमन होकर सभ दोष दूर होगा यदि व्याकुलता देखे तब एक दिन छोडकर खिलावे भोजन चनेकी रोटी शीतल करके खावे कुष्ठ दूर हो, इलायची और मक्खनी साथ खावे तो बलवीर्य्य पुष्टि करे और अनुपानसे सभ रोगोंपर देना।

अथ तीसरी विधि ३ ।

इटसिट (पुनर्नवा) को लेकर उसका गुद्दा करे फिर उसमें तांबा धर ऊपर कुछ दो तीन वस्त्र खण्ड देकर ३० सेर पक्के गोहेकी आग दे गढेमें जब शीतल हो तब निकाले अनुपानसे वरते तांबेसे त्रिगुण मह्रुदाणा पीसकर पत्रके चारों ओर लपेटे और तांबेके बराबर कलीका पत्र करके उसके ऊपर लपेटना फिर ५शेर वस्त्रखण्ड (लीर) उसके ऊपर लपेटके आग दे शीतल होनेपर निकाले अनुपानसे सभ रोगपर देना।

अथ चौथी विधि ४ ।

पैसेको लेकर भतकलके रसमें ७ वार बुझावे फिर इसीके गुद्दे (नुगदे) में रखके ऊपरसे इटसिटका गुद्दा थोडा२ लपेटे५ सेर गोहोंमें आग दे इस प्रकार५ पुट दे तो तांबा बहुत अच्छा बने अनुपानसे देना ।

अथ पांचवीं विधि ५ ।

राईकी गंदलोकी गिरि १ सेर पक्की लेवे फिर उसको घोटकर जलमें निकाले उस पैसेको एकोत्तरशत १०१ पुट देवे फिर उसी गंदलेके फोकमें लपेट १० सेर पक्की २ पाथियोंमें गर्त्त (गढा) कर उसमें रख गोबरसे लीप सुकावे फिर आग दे शीतल होनेपर निकाले रंग श्वेत होगा मात्रा उडद (माष) परिमित देनी मरण समय जब मूर्च्छा हो तब कस्तूरी मिलाकर मुंहमें पावे ऊपरसे अदरखका जल डारे तब मूर्च्छा दूर

होवे और बातें करे एक चावल खानेसे बल वीर्य्य बढे पुष्टि हो भूख लगे ।

अथ छठी विधि ६ ।

पैसा चोखा लेकर आगमें तपाकर ७ पुट आकके दूधकी देनी फिर ७ पुट दहीमें फिर ७ घीकुमारमें देवे फिर एक पैसाभर हरताल १ पैसाभर तेलिया मीठा ले दोनोंको पीस पैसेके नीचे ऊपर दे कुज्जेमें रख सम्पुट करे फिर सुकावे गजभर गढेमें मन पक्के वनके गोहे नीचे ऊपर देकर फूंक दे शीतल हो तब निकाले फूलकर खील हो जावेगा । फिर तोले उससे ६ भाग आधा पारा पावे फिर खरल करे कुमारके रससे जबतक पारा मिलके एक रूप हो तबतक घोटे फिर गोली कर कुठालीमें धर संपुटकर १ सेर पक्के गोहेकी आग दे शीतल हो तब निकाले मात्रा १ रत्ती पुराना ताप, खांसी आदि सर्वरोग दूर करे ।

अथ सातवीं विधि ७।

१सेर ताम्बेके पत्र कराय गोमूत्र आदि-में शोधे फिर ७। सेर पारा और उतनाही गं-धक इन दोनोंको घीकुमारके रसमें १ दिन घोटे फिर ताम्बेके पत्रोंपर लेप करे फिर सु-खाकर दूसरी वार लेप करे फिर हांडीमें घर छापनी (चपनी) से मुंह बन्द कर हांडीको चूल्हेपर चढाय नीचे ८ प्रहर अग्नि जलावे जब लाल हो जावे तब काढ ले ताम्बेश्वर सिद्ध होय १ रत्ती पानमें खाय तो सब रोग जाय गुण करे।

अथ आठवीं विधि ८।

ताम्बेके बहुत बारीक पत्र करावे फिर गर्म कर अग्निमें बुझावे ७ वार फिर मूलीके रसमें ७ पुट दे और निबूके रसमें ७ पुट दे फिर उन पत्रोंके छोटे २ कुतरे (खण्ड)करे फिर पत्रोंके बराबर आंवलेसार गन्धक ऊपर नीचे देकर कुठालीमें पत्रोंको ऊपर

नीचे रक्खे ऊपर और कुटाली देवे फिर दोनोंका संपुट कर सुकावे फिर कपरोटी कर सुकावे १ मण गोहेकी आगमें गजपुट दे फिर निकाले और उसको पीसकर बराबर तेलिया जायफल मिलावे संपुटमें धर फिर गजपुट दे सरद होनेपर निकाल कर पीसे फिर धत्तूरेके फलोंसे भरकर संपुट कर आग दे फिर निकालकर पानके पत्रोंके रसमें धत्तूरेकी राख और तांबेको ४ प्रहर खरल करे फिर चने परिमाण गोली करे सुकाकर प्रातःकाल दुग्धके साथ खावे २१ दिन खानेसे नपुंसकता दूर होय और बलवीर्य्य बढे अनुपानसे और रोगोंपरभी वरते ।

अथ नववीं विधि ९ ।

तांबेके पत्र कराय पूर्वरीतिसे गोमूत्र आदिमें शोधे फिर इमलीके फूल मंगाय एक हांडीमें भरे तिसके बीच पत्तर दे तांबेके पत्र धरे और पानी डार १२ प्रहरकी आग

दे फिर पत्रोंको रेती (चूर्ण करवाकर) कढा-ईमें डार निंबूके रसमें खरल करे फिर ५ तोले पारा मंगाय कागची निंबूके रसमें २ प्रहर ख-रल करे फिर तांबेमें घोटकर चराय दे फिर ७ तोले गन्धक मंगाय निंबूके रसमें खरल करि गोली बनावे बीचमें तांबा रक्खे ऊप-रसे निंबूके रसमें ७ कपरोटी करे फिर एक मटुकी लेकर उसके ऊपर ७ कपरोटी कर उसमें बालू (रेत्ता) भर बीचमें पत्र धरे फिर वज्र मुहा करि भट्टि पर चढाय ३ दिन आग दे शीतल होने पर उतारे इसकी मात्रा एक रत्ती खाय तो ५ सेरकी भूख होय अंग जाड्य नपुंसकता कास श्वास जाय वात पित्त जाय सभ वाई दूर होय ।

अथ दसवीं विधि १० ।

दोहा ।

घोरि जंबिरि रंग रस सो पारा गन्धक दोय।
पत्र लपेटे ताम्रके तासों यह विधि होय ॥

सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय ।
तीनवार इमि आंच दे ताम्र भस्म हो जाय ॥

अथ तांबेके खानेकी विधि ।

हरड बहेडा आंवला मघा सुंठि मंगवाय॥
मोथा मिरच बडिंग ले तामें जीरा पाय ॥१॥
छोटी डारे लायची सभी वराबर लेय॥इसमें
तांबाभस्मको भाग तीसरा देय ॥ २ ॥ मिस-
री सभ सम लेइ कर छह मासे भर खाय ॥
पीछे गोघृत पान करि यह विधि मास बि-
ताय ॥ ३ ॥ भूख लगे कांती बढे सभी रोग
हट जाय ॥ वीर्य्य पराक्रम बहु बढे लाल रंग
हो जाय ॥ ४ ॥

उपदेश–शास्त्रमें तांबेका वरतना क-
ठिन लिखा है क्यों कि तांबेमें ८ दोष प्रबल
हैं इसलिये तांबेकी परीक्षा कर वरते परीक्षा
यह है जब तांबा जलपर तरे और चमक न
रहे और खानेसे चित्तको उछलावे नहीं,
मुखमें जल न गिरे और दहीमें डारनेसे

दहीका रंग तांबेके रंगसे और दूसरे विकृत रंग (नील) आदिको न पकडे तब जाने कि यह तांबा अच्छा बना है इससे विपरीत अच्छा नहीं यह परीक्षा यथार्थ है ।

अथ वंगका स्वरूप ।

वंग यह धातु पर्वतसे उत्पन्न होता है और खुरक और मिश्रक ये दोनों इसके भेद हैं इनमें खुरक अच्छा है और मिश्रक जो मिलावटसे बनता है वह अच्छा नहीं ।

अशुद्ध वंगके दोष ।

अशुद्ध वंग कुष्ठ, फोडे, शूल, शोजा, पाण्डु, प्रमेह, भगंदर, रुधिरविकार, क्षय (खई), मूत्रकृच्छ्र, कफज्वर, पथरी, वघ, अंडरोग इतने रोगोंको करता है इसलिये अच्छी तरह शोधना चाहिये ।

अथ शोधन ।

वंगको गलाकर तैल, तक्र, कांजी, गोमूत्र, कुलथीका काढा इन प्रत्येकमें तीन २

वार बुझावे फिर तीन वार आकके दूधमें बुझावे तब शुद्ध हो ।

अथ शुद्ध कर भली भांत मारी हुई वंगके गुण।

वंग लघु है और विरेचक है रूक्ष है कुष्ट, मेह, कफ, कृमि इनको दूर करता है और पांडु श्वासको नाश करता है नेत्रोंको निर्म्मल करे और कुछ पित्तभी करता है ।

कुंडली—जिमि घोडेको तंग रंग रणमें दिखलावे ॥ तिमि नरके यह वंग अंग सबही फुरकावे ॥ १ ॥ तनमें बहु सुख होय वीर्य्य बल वृद्धि कीजै ॥ दो रत्ती भर खाय दूध पीछे जो पीजै ॥ २ ॥ कहैं वैद्य सुजान वंग सबको हितकारी ॥ अनुपानविध देख खाय इसको नर नारी ॥ ३ ॥

अथ वंग (कलि) मारनेकी विधि ।

कवित्त—वंगको गलाय तेल कांजी मट्ठा

मूत (गोमूत्र) में बुझावे ७ वार तैसों त्रिफलेके पानीमें आकहीके दूधमें बुझावे।। पुन७ वार चूल्हेपै चढावे फिर राखि कडछानी (कडछी) में पीपलीके वकलाको पीस तैसे आमलीके दोनोंको मिलाय डारे ऊपर जो वंगके, आच्छो लोह दंड होई तासों घोटो पहर दोई (२) भस्मके समान होई आच्छो दीखे रंगमें पुनि सम लेई हरताल वामें डारि घोटे निंबूको मिलाय रस वाकी गोली कीजिये याहि विधि गज पुट देवे १० वार जब सुंदर सुजानि वाकी राख तब लीजिये। मात्रा इसकी एक रत्ती अनुपान वंशलोचन, लायची,मुलहट्ठी, सहत, मिश्री,मक्खन सभ मिलाकर ४ मासे भर लेवे ।

अथ दूसरी विधि २।

वंग १ तोला पारा १ तोला नौसादर १ तोला गन्धक १तोला इस मानसे लेवे प्रथम वंगको गलाय पारेमें डार मिलावे फिर खर-

ल करे लवण (निमक) का पानी पावे फिर घोटता जावे १ घडीके अनन्तर उस पानीको नितारकर डार देवे फिर और निमकी पानी पाकर खरल करे इस प्रकार २१ वार निमकी पानीसे धोवे लवण (नून) सेर १ खरच होता है फिर शुद्ध जलसे धोकर गंधक और नौसादर मिला सभको एक कर ४ प्रहर खरल करे फिर आतसी शीसी लेकर उसको ७ कपरौटी करे गाजनी मिट्टीमें लेप करे फिर कच्ची मिट्टीका लेप कर १ कपरौटी करे फिर सुकावे बीचमें औषध पावे फिर १५ सेर कोइले धुखावे (भखावे) फिर उसमें शीसीको खुले मुंह गाडे २ प्रहर कोइलोंको तेज अग्नि देनी फिर शीतल होनेपर नीकालकर सीसीको तोडे युक्तिसे कलीको निकाले रंग इसका बहुत अच्छा लाल होगा और स्वर्ण समान गुण करे बल वीर्य्य बन्धेज (स्तंभन) आदि बहुत गुण

करे स्त्रीके उदरमें जो पवन विकार हो उसे काहजबाणके अर्कसे देवे और जो स्त्रीको सोमरोग हो जिसमें जल चलता रहता है उसे नागकेसर और छोटी इलायचीसे देवे यदि रोगका बहुत जोर हो तब मात्रा ७रत्ती देवे और इसमें वालुकायन्त्रसेभी अग्नि दी जाती है ८ प्रहरकी आग देनी ३ प्रहर मुंह खुला रखना फिर सम्पुट कर छाप देना यह रीति अच्छी है कस्तूरी केशर भीमसेनी कपूर लौंग इलायची ये सभ बराबर ले इनके सम यह वंग पावे फिर ४ रत्ती वा एक मासा खावे बलवीर्य्य बढे और अनुपानसे सभ रोगोंपर चले ।

अथ तीसरी विधि ३ ।

एक तोला कली ले उसके पत्रे करे छः मासे कलमी शोरा लेकर उसको लोनी बूटीके रसमें वा सज्जीके पानीमें बाहरमल (जो कवरोंपर बहुत होती है उस)के रसमें

रगडे फिर कलीके पत्रोंपर लेप कर उनको नीचे ऊपर रखकर एक सेर पक्के वस्त्रखण्ड (लीर)में लपेटकर आग दे जब शीतल हो तब निकाल कर पीस लेवे फिर हरमल बूटीके रसमें खरलकर ३ पुट देवे तब वंग चोखी बने । अनुपानके साथ सभ रोगोंपर चले रूमी (मस्तकी)और दालचीनी इनके साथ दो रत्ती खानेसे ११ दिनमें प्रमेह दूर होवे ।

अथ चौथी विधि ४।

वंगऽ॥ ले कडाहीमें पिंगलावे तिस पीछे ३ अजवायण हलदी ऽ। भर ले एकत्र पीस कडाहीमें वंगपर बुरकता (डारता) जाय और ढाककी लकडीसे चलाता रहे तब वंग मरे इसके खानेकी यह विधि है ३ तोले वंग, लौंग इलायची जायफल जावित्री सौंठ मिर-च पीपल तज पत्रज नागकेशर यह सभ औषध बराबर ले १ टंककी गोली बान्धे १

गोली नित्य खाय तो शुक्रवृद्धि होय, कृश-ता, हडफूटन, दाह, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर ये सभ रोग जांय, अनुपानसे यथा रोग देना ।

अथ पांचवीं विधि ५ ।

कली २ तोले पारा २ तोले लेवे फिर कलीको लगाकर पारा मिलावे फिर खरल करे लवणके पानीसे धोता जावे २१ वार धोवे २ तोले लवणका पानी करना फिर भंगके बीज १० तोले खुरासानी जवायण १० तोले ये सभ वस्तु कूट कर रक्खे फिर दो पाथियां बडी २ लेकर एक पाथी ऊपर यह औषधि बिछावे फिर पारेमें मिली हुई कली-के खण्ड (पत्ते) कर उस बूटीमें धरे फिर बूटी धरे ऊपरसे कलीके पत्रे रक्खे इस प्रकार रखता जावे फिर ऊपरसे बूटी रख दूसरी पाथी देवे फिर गोबरसे लेप कर सु-कावे फिर आग दे शीतल कर निकाले यदि कुछ कच्ची रहे तो फिर पारा मिलाकर

भांगके बीज और जवायण इनका क्काथ (काहडा) मिलाकर लघु पुट देवे फिर निकाल घोट कर रक्खे अनुपानसे सभ रोगोंपर चले अजीर्ण संग्रहणी विषूचिकावालेको काह जवायणके अर्कके साथ देवे मात्रा १ रत्ती ।

अथ छठी विधि ६ ।

वंग १ तोला सिक्का १ तोला जिस्त १तोला पारा ६ मासे इन सभको लेकर लोहेके कडछेमें धर आग देवे (इटसिट) पुनर्नवाकी जड उसमें फेरे और पोस्तको कूट चूण करे फिर चूर्ण वंग आदि औषधोंके ऊपर डारता जावे नीचे तेज आग जलावे जब भस्म (राख) हो जावे तब शुद्ध पानीसे धोकर ३ दिन कुमार गंदलके रसमें रक्खे फिर भेडके दूधमें खरल कर टिक्की बान्धे फिर पाव कच्ची जवायण नीचे ऊपर देकर सरावमें सम्पुट कर २ मन पाथियोंकी आग देवे

फिर शीतलकर निकाले रंग पीला होगा धातुक्षीणमें दूधसे खावे शीततामें जायफलसे खावे ज्वरमें गिलोयके सत और सहतसे खावे अनुपानसे सभ रोगोंपर चले मात्रा रत्ती१

अथ सातवीं विधि ७ ।

कुंडलिया—पारा वंग समान ले दोनों लेय मिलाय । ७ वार इमि आंच दे वंग भस्म हो जाय ॥ वंग भस्म हो जाय स्वर्ण गुण यामें जानो।सभ रोगोंमें देइ बलाबल दोष पछानो ॥ गावें सभी सुजान वंग नरको हितदाई। जिमि घोडेको तंग जोर तनमें भर जाई॥१॥

अथ आठवीं विधि ८ ।

वंगको लोहेके कडछेमें धरकर गलावे जब गलजावे तब शोरा और सुहाग समान (बराबर) पीसकर ऊपर थोडा २ डारता जावे वट (वड)का दण्ड बीचमें फेरे और वट (वोहड) की लकडीकी आग जलावे जब रक्त(लाल) रङ्ग हो जावे तब बने नेत्रों-

के सभ रोगोंको खानेसे और अञ्जन करनेसे दूर करे १ मात्रा रत्ती १ यथा रोग वर्ते ।

अथ नवमी विधि ९ ।

कुंडलिया–सुंदर टाट बिछायके वामें भांग बिछाय । वंगपत्रको परत दे राखे खूप खिलाय ॥ राखे खूप खिलाय गर्त गजभरका एक बनावे । वामें धर दीजे गजपुट तब वंगखील हो जावे ॥ घोट पीस फिर याको लीजे । त्रिफलाकी पुट देय सभी रोगोंमें दीजे ॥ १ ॥

अथ दशवीं विधि १० ।

चौपाई–पहिले दूध आकको लावे। फिर तासों हरताल पिसावे ॥ वंग पत्रसों वह हरताला । लपिटावे इत उत तत्काला ॥ ताऊपर पीपलको वकला । राखौ कूटि देय पुनि सकला ॥ धरि सरावमें करि कपरौटी। गजपुट आंच देय पुन मोटी ॥ सात वार यह विधि पुट देय। पीपल वकला फिरके

लेय ॥ वार दूइ इमि आंच दिखावे । मरे वंग सोइ कामें आवे ॥ १ ॥

अथ वंग खानेकी विधि ।

लौंग, जायफल, इलायची, जलवत्री, मुलहट्ठी, अजमोदा, दालचीनी, वंशलोचन, शतावर, नगौरी असगन्ध ये सभ १ तोला वा दो२तोले लेवे अच्छी मरी हुई वंग ले सभ समान मिश्री पावे मात्रा ४ मासे वा ६ मासे प्रातःकाल मखनीसे रात्रीको महिषी दूधसे खावे बल वीर्य्य बढे सभ रोग कटे ।

अथ जिस्तका शोधन ।

इसका शोधन मारण वंगकी रीतिसे करना और गुण इसके ये हैं, रेचन है, तिक्त है, शीतल है कफ पित्त मेह पाण्डु श्वास इन रोगोंको दूर करता है नेत्रोंको बहुत हित है।

अथ जिस्तमारणविधि ।

जिस्त १ तोला पारा १ तोला काबली मिश्री २ तोले जिस्तको कढाहीमें पाकर

गलावे बीचमें पारा पावे नीचे मन्द २ आग दे फिर मिश्रीको पीस थोडी २ ऊपर डारता जावे बकायण (डेक) दण्डहरा बीचमें फेरता जावे जब फूलकर जिस्तकी खील हो तब उतारे रंग इसका श्वेत होगा १ रत्ती मखनीसे खावे बल वीर्य्य बढे फिर आंखोंमें पानेसें सभ रोग जांय।

अथ शीशेका शोधन।

इसका शोधन वंगके समान है और गुण दोषभी वैसेही हैं परन्तु प्रमेहको विशेषतासे नाश करता है।

दोहा।

नागकरे शतनागसम, बल नरके तनमाय।
व्याधि काटि जीवन देइ, भूखकामबढजाय १

अथ नाग (शीशे) की मारण विधि।

शीशेको शोध कडछेमें चढावे नीचें अग्नि जलावे फिर केवडेके घोटेंसे १ दिन निरन्तर रगडता जाय वह भस्म लाल हो

जाय इसकी मात्रा १ रत्ती नित्य २१ दिन खाय तो बहुत गुण करे ।

अथ दूसरी विधि २ ।

शीसे (सिक्के) के समान सोरा ले शीसे-को कडाहीमें रख नीचे आग दे बहुत तेज ऊपरसे थोडा २ शोरा डालता जावे लोह-दण्ड (हथौडी) बीचमें फेरता जावे जब सम्पूर्ण शोरा खरच हो चुके तब शुद्ध हो जाता है फिर पीस रक्खे मात्रा १ रत्ती वा दो रत्ती अनुपानसे शीतलता, उष्णता (स-रदी गरमी) दूर हो इन सभ धातुओंके खानेसे खट्टा, कच्ची मिठाई रूक्ष वस्तु न खावे घृत दुग्ध बलकारी वस्तु खावे, रो-गोंका पथ्य पृथक् २ ग्रन्थोंसे देखकर वर्ते ग्रन्थ विस्तरभयसे लिखे नहीं है ।

अथ तीसरी विधि ३ ।

एक पाव भर सिक्का लेकर कडाहीमें पावे नीचे अग्नि जलावें ऊपरसे कुमारका

गुद्दा डारता रहें जब दो मण गुद्दा जल जावे तब सिक्का अच्छा बने मात्रा १ रत्ती कफ वाई जलोदरवालेको जमायण पीपल सहत इनके साथ देवे ।

अथ चतुर्थ विधि ४ ।

सिक्का २ तोले पारा २ तोले केसूफूल मण कच्चे ले फिर उनकी स्याही दूर कर शुद्ध करे फिर कूट लेवे और सिक्केको कडाहीमें डार गलावे फिर पारा मिलावे ऊपरसे केसू डारता जावे और लोहेकी कड़ंसे फेरता जावे नीचे आग जलावे पीपलकी लकडीकी १२ प्रहर आग देनी पहिले काला रंग हो पीछेसे लालरङ्ग होगा मात्रा १ रत्ती उपदंश (सुज़ाख) वालेको ७ दिन खिलानेसे आनन्द दे और रोगोंपर यथाविधि अनुपानसे देवे ।

अथ पांचवीं विधि ५ ।

सीसा (सिक्का) ५ तोला मैनसिल एक

तोला गन्धक छाछिया १ तोला ले सीसेके५ पत्र करावे फिर दो संपुट मंगाय दोनों औषधि महीन पीसकर उनमें बिछावे तिसके ऊपर परत देकर सीसेके पत्र धरे ऊपरसे और औषधि दे फिर ऊपर ठूठी धर ७ कपरोटी करे फिर संपुटको एक अंगीठीमें धर गजपुट दे जब शीतल हो तब निकालेमात्रा १ रत्ती खाय तो धातु बढे भूख बहुत लगे ।

अथ छठी विधि ६ ।

सीसेको कडाहीमें गाले अपामार्ग(पुठकंडा) की लकडी बीचमें फेरे जब भस्म हो जावे तब निकाल पीस रखे मात्रा १ रत्ती सुजाखवालेको देवे सरद चीनी और छोटी इलायचीसे यथा रोग और रोगोंपरभी दे ।

अथ सातवीं विधि ७।

सीसेको कडाहीमें गलावे कीकर (बबूर) की हरी लकडी बीच में फेरता जावे जब भस्म हो तब उतारे मात्रा रत्ती १ सुजा-

खवालेको देना और जिसकी धातु क्षीण हो उसको मखनी और मिश्रीके साथ देना प्रदर रोगमें वंशलोचन श्वेत जीरा छोटी इलायची मिश्री इनके साथ देना ।

अथ कली, जिस्त शीसा इन तीन धातुओंके इकट्ठे मारने की विधि ।

इन सबको तोला२ले कडछेमें रख गलावे फिर गौके घृतमें बुझावे फिर मिट्टीके पात्रमें रख गलावे ३ छटांक पोस्तका चूर्ण कर थोडा २ ऊपरसे डारता जावे नीचे आग दे जब भस्म हो तब उतारे फिर खट्टे दहीमें खरल कर चंदी(टीकी)बनावे फिर खपर(ठीकरा) में रख तेज अग्नि दे जब बसन्ती रंग हो तब उतार कर पीसे मात्रा ९ रत्ती खाय धातु क्षय रोग जावे खट्टा कच्ची मिठाई न खावे ।

अथ जिस्त तांबा चांदी इन तीन धातुओंके मारनेकी विधि ।

जिस्त और तांबा इनको बराबर ले दूनी

चांदी ले तीनोंको एकत्र गलावे पत्रें को
फिर ५ गुनी हरताल ले पत्रके नीचे ऊपर
देकर संपुट करे फिर मण पक्की गोशालाकी
मलस (मलीह) गर्त्त (गबीला) में पाकर
आग दे तीसरे दिन निकाले फिर दूनी हर-
ताल डारकर ३ लघु (छोटी) पुट देनी
फिर सिद्ध हो मात्रा रत्ती १ बल वीर्य्य करे।

अथ अशुद्ध लोहेके दोष।

अशुद्ध लोह कुष्ठ आदि बहुत रागे कर-
ता है इसलिये इसको शोधकर मारे।

अथ शोधन।

लोह बारीक पत्र करके तैल आदि पूर्व
वस्तुओंमें गरम कर तीन २ वार बुझावे
तब शुद्ध हो जाता है।

अथ गुण।

शुद्ध लोहा बवासीर प्लीहा (तिल्ली)
पाण्डु आदि रोगोंको दूर करता है और

तिक्त है रेचक है गुरु है अवस्था बढाता है और इसका किट्टभी इसीके समान है ।

अथ सार(फौलाद) के मारनेकी विधि। चौपाई ।

करि सरिया (सरी) गजवेलि (लोहभेदः) रितावे।ताको चूर्ण तोलि मंगवावे।।ता चूर्णको द्वादश अंशा।इंगुर [अंगूर] डारे विधि औसंशा।।घृतकुमारको डारे नीर। हुई २ प्रहर लों घोटे धीर।।सरवा मधि धरि करि कपरौटी।आंच देय गज पुटकी मोटी।।फिरि घोटे फिर २ आंच।वार २ इमि करिये सांच।। तब लोहा मरीजाय निदान। होय सिद्धि औषधिपरिमान ॥

अथ दूसरी विधि २ ।

पौलाद चोखा ले रितावे फिर उसका चूर्ण १० तोले लेवे उसमें दश मासे पारा पावे २ प्रहर खरल करे निम्बूका रस डारे जब एकरूप हो तब सरावोंमें सम्पुट करे फिर वनके

पाव भर गोइटामें बुढकावे फिर निकाल १० मासे पारा डाल २ प्रहर सरावमें खरल कर इसी प्रकार पुट दे इस रीतिसे ८० पुट दे प्रत्येक पुटमें शराब्र और १० मासे पारा डारता जावे ८० पुट देकर तोले जितना पारा पावे उतना तोलमें बढ जावेगा फिर ४ मासे संखिया डारकर २१ पुट देवे प्रत्येक पुटमें ४ मासे संखिया पाता रहे और दशवें पुटमें नया सराव लेना पूर्वको छोड देना फिर आतसी सीसीमें भरकर उसके मुंहको लेपकर कनक (गोधूम) की कोठीमें २१ दिन गाडे फिर निकाल तीसरे दिन सीसीको तोड औषध निकासे रंग इसका नौरंगीके समान होगा मात्रा इसकी एक तृण७दिन खानेसे भूख बढे बल वीर्य्य विशेष हो विना स्त्री न रहे अनुपान गौकी मखनी और यह पुराना अच्छा है शरद ऋतुमें इसका खाना अच्छा है अनुपानसे सभ रोगोंपर चलावे ।

अथ तीसरी विधि ३ ।

फौलादको रिताकर चीनीके पात्रमें धर जामनके पत्तोंका रस पावे फिर ७ दिन धूप- में धरे प्रतिदिन नया जल पावे यदि धूपका तेज थोडा हो तब १५ दिन धरे इस प्रकार करनेसे इसीमें मर जावेगा रंग सो- सनी होगा मात्रा १ रत्ती अनुपानसे देना ।

अथ चौथी विधि ४।

लोहेको रितवाकर १० दिन काकमाची (मको) के रसमें खरल करे फिर कूजे (मटके) में धर ५ सेर बनके गोहा(गोइटा) की रातको आग दे फिर इसी औषधका रस डार दिनमें खरल कर रातको पुट देता जावे इस प्रकार ४० पुट देवे फिर अच्छा बने फौ- लादकी परीक्षा यह है जब जलपर तरे तब समझे कि अच्छा है मात्रा १ चावल उदर रोग वाई इनको दूर करे अनुपानसे सब रोगोंपर देना ।

अथ पांचवीं विधि ५।

दो तोले पौलाद लेना फिर रितवाकर लोहेके संपुटमें धरे बीचमें एक तोला नौसादर डारे और ४ तोले निंबूका रस डारे मुद्रा संपुट आटेकी करे फिर गजपुट दे इस प्रकार४पुट दे फिर एकदिन दहीकी भावना देकर १५ सेर पाथियोंमें आग दे फिर ११ दिन कणक (गोधूम) की कोठीमें राखे फिर खरल करे मात्रा २ रत्ती अनुपान मखनी मिश्री इलायची इनके साथ देना पाण्डु आदि सब रोग जांय।

अथ छठी विधि ६।

फौलादको रितवाकर ७ तोले ले फिर अढाई तोले नौसादर मिलाकर आधपाव कच्चे आकके दूधमें खरल करे फिर ठीकरेमें डार२ सेर गोइटोंका भुडका दे फिर आकके दूधमें खरल कर इसी प्रकार आग दे फिर पांच सेरकी आग दे ३ दिन ७ सेरकी आग

दे फिर दो दिन १५ सेरकी आग दे फिर त्रि-
फलेके रसकी दो पुट छोटी २ दे अनुपानसे
सब रोगोंपर देना ।

अथ सातवीं विधि ७ ।

लोहा और चूना पांच पैसेभर मैनसिल
अधेलाभर कसीस ये दोनों औषध सूकी पी-
सकर ३ भाग करे १ भाग चुकरियां सरावमें
पानी डारकर डारे फिर लोहा और चूना दो-
नोंको लोहेके बासनमें डारि लोहेके घोटेसे
घोटे ७ दिन फिर औषध डारि ७ आंच दे
जब शीतल होय तब उतारे अनुपान सोंठ १
टंक भर मिश्री १ टंक भर ये औषध लेकर
२१ पुडियां बान्धे इनकी साथ खायके ऊप-
रसे सवासेर दूध पीवे धातुक्षय जाय धातु
बढे ।

अथ पौलाद खानेकी विधि।

हरड बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल
मोथा जीरा बडिंग ककेंरा शतावर सब

बराबर ले इनका तीसरा भाग शुद्ध पौलाद पावे बराबर मिश्री डार छःमासे दूधके साथ खावे २१ दिन बलवीर्य्य कांति नेत्रज्योति बढे ।

अथ मनूर मारनेकी विधि ।

मनूरको कूट कपड छानकर कूजेमें पावे फिर खट्टा दही डारे ढापनीसे मुख रोके मण कच्चे गोहेकी आग दे फिर कुमारके रसमें खरल करके४दिन फिर बारीक चांदी टीकी कर घडेमें धर मुखमुद्रा कर जगपुट दे जब शीतल हो तब निकालकर पीसे मात्रा १ मासा मखनीसे खावे उष्णता (गरमी) को दूर करे पांडु आदि सब रोग जावें ।

अथ दूसरी विधि २ ।

मनूरको ले कडाहीमें डारे गोमूत्र डारकर १ पहर पकावे फिर कुमारके रसकी पुट देकर अनुपानसे यथायोग्य देवे ।

अथ उपधातु ।

सोनामक्खी रूपामक्खी १ अभ्रक २ मैनसिल ३ हरिताल ४ पारा ५ खपरिया ६ सुरमा ७ इनके शोधन मारनेकी विधि ।

अथ सोनामक्खीका शोधन ।

सोनामक्खी ३ भाग सेंधा लवण (नोन) १ भाग ले दोनोंको लोहेके कडछेमें धरे ऊपरसे बिजौरेका रस और जंबीरीका रस डार पकावे जबतक लोहेके पत्र लाल हों जांय तबतक पकाता रहे इस प्रकार सोना और रूपा शुद्ध होय जाय ।

अथ मारण ।

सोनामक्खीको कुलथीके काढेमें १ दिन खरल करे संपुट कर गजपुटमें आग दे फिर दो लघुपुट दे तो सोनामक्खी चोखी बने इसी प्रकार तेलमें अथवा मट्ठेमें अथवा बकरीके दूधमें पीसकर पुट दे तो सोनामक्खी अच्छी बने ।

अथ अभ्रक शोधन ।

काला अभ्रक(भोडल)ले अग्निमें तपाय दुग्धमें बुझावे वा चौलाईके रसमें वा खटाईमें बुझावे तब अभ्रक शुद्ध होय ।

अथ धान्याभ्रक करनेकी रीति ।

शुद्ध किये अभ्रकका पृथक् २ पत्र करे फिर उन्हें कूट महीन कर सुकावे फिर कंबरमें डारि बीचमें शालि(धान) मिलाय दोनों मसल २ पानी डारी कंबलसे पृथक् २ बासनमें बाहिर काढे तब यह धान्याभ्रक मारने योग्य हो ।

अथ मारण ।

शुद्ध धान्याभ्रक ले आकके दूधमें खरल कर टिकडी बांध सुकावे फिर आकके पानीमें लपेट कपरौटी कर बिना सरवे. गजपुट दे फूंक दे इस प्रकार ७ पुट दे फिर थोहरके दूधकी७पुट दे फिर कुमार रसकी७फिर चौलाईके रसकी ७ पुट दे अथवा नागरमोथेके

काढेकी वा कांजीकी वा चित्रकके काढेकी वा जंबीरीके रसकी वा त्रिफलेकी वा गोमूत्रकी इनकी ७।७ पुट दे तो अभ्रक अच्छा बने मात्रा १ रत्ती २ महीने तक खाय तो शरीर पुष्ट हो प्रमेह आदि सब रोग जांय।

अथ दूसरी विधि ।

अभ्रक श्वेत महीन पीस कांसेके कटोरेमें डारे फिर हाथी सुंठी बूटीका रस बीचमें डारे भरपूर राखे ७ दिन पर्य्यंत धूपमें धरे रस डारता रहे सुकने न पावे फिर ७ दिनके अनंतर २ दिन खरल करे रस डारे फिर पीसकर राखे अनुपानसे देना मात्रा १ रत्ती गिलोयके सतसे ज्वरवालेको देवे ।

अथ तीसरी विधि ।

काला अभ्रक ले उसके समान गुड पाकर कूटे फिर कूजेमें संपुट कर रात्रिको आग दे फिर प्रातःकाल निकाल कर पीसे फिर पानी डार कर धोवे फिर गुड डारकर ४ प्र-

हर कूटे फिर आग दे दूसरे दिन पानीसे धो-
कर उसकी बराबर कलमी शोरा डार १०
सेर पक्के गोहेकी आग दे फिर धोकर मन्द
धूपमें सुकावे फिर जितने तोले अभ्रक हो
उतने मासे पारा पावे फिर आकके रसमें
खरल कर पारा और अभ्रकको एकरूप
करे फिर संपुट कर ५ शेर गोहेकी आग
दे इस प्रकार आग दे अर्थात् दश पुट दे
प्रत्येक पुटमें पारा डारता जाय ५ शेर गोहे-
की पुट देता जाय पारा शुद्ध कर पावे
आकके रसमें खरल करे और इसमें पारा
उडता नहीं जितना पारा पडेगा उससे
कुछ न्यून तोल रहेगा मात्रा चावल १ पुष्टि
भूख बहुत होती है शूल रोगको अच्छा करे
फिरंगकोभी दूर करता है आकका पंचांग
लेकर पातालयन्त्रसे रस निकालना वा
कूटकर निकालना ।

अथ चतुर्थं विधि ४।

सुफेद अभ्रकके बराबर गुड लेकर उसको पानीमें घोल अभ्रकके पत्तोंको गाढा २लेप करे और उन पत्रोंके ऊपर सोरा भुरकता जाय शोरा अभ्रकसे आधा लेना फिर उन पत्रोंकी तहकरके आगमें फूंक देय तो अभ्रक खील हो जाय यदि निश्चन्द्र न हो तब और पुट दे मात्रा १रत्ती सुजाख आदि रोगोंको दूर करे। काला अभ्रक ले दूध तेल कांजी कुलथीका क्वाथ इनमें २१ वार बुझावे फिर शोराके गरम पानीमें १०१वार बुझावे फिर खरल करि टिक्कियां बांधि सुकादे तिस पीछे टिक्कियांके बराबर पारा दे गजपुटकी आंच दे तो सिद्ध होय जो कच्चा रहे तो फिर आग दे अनुपानसे यथा रोग देना।

अथ छठी विधि ६।

सुफेद अभ्रक ले उसके बराबर सिर्का और कलमी शोरा डारकर खरल करे फिर

गजपुटमें फूंक दे फिर दो लघु पुट दे तो अ-
भ्रक चोखा बने ।

अथ सातवीं विधि ७ ।

अभ्रक काला वा सुफेद लेकर महीन
करे फिर मूलीके पानीमें तर करके कूजे
(मटुके) में धर मुखमुद्रा कर ७ दिन धूपमें
धरे फिर मूलीके पानीमें खरल कर ४ पुट दे
तो अभ्रक अच्छा बने मात्रा २ रत्ती ७ दिनमें
सुजाख और पित्तज्वरको दूर करे ।

अथ अभ्रक खानेकी विधि ।

मुसली २, जावित्री, जायफल, पीपल, ब-
दामगिरि, कर्करा, केशर, वंशलोचन, सता-
वरी, असगन्ध, शुद्ध मरा हुआ काला अभ्रक
इनके बराबर मिश्री इन सबको एकत्र पीस
छः मासे दूधके साथ खाय तो बल वीर्य्य बढे
नपुंसकता जाय सुपेद अभ्रकके अनुपान
तालमखाना कौंचबीज दालचीनी सेंधा नूण
असगन्ध वंशलोचन बेलगिरी इलायची

भंगके बीज बदाम खस कमल गिरि लौंग जवायण मघ आंवले धावा गोखरु २ मुसली इन्द्रयव सुपेद अभ्रक सबसे दूनी मिश्री मात्रा ६ मासे अनुपान कच्चा गो दुग्ध ।

अथ मारित अभ्रकके गुण ।

कषैला मीठा और शीतल आयु और धातुको बढानेवाला त्रिदोषको हरनेवाला व्रण मेह कुष्ठ तिल्ली उदर रोग ग्रन्थि विष कृमि इन रोगोंको नाश करे और बल वीर्य्य बढावे ।

अथ अशुद्ध हरितालके दोष ।

आयु हरता है और कफ वायु प्रमेह ताप स्फोट अंग संकोच ये विकार करता है ।

अथ शोधन ।

चोखा हरिताल ले छोटे २ खण्ड करके दोलायन्त्रमें कांजी डार १ प्रहर पकावे फिर पेठेका रस और तिलतैल और त्रिफला इन-

में २ प्रहर औटावे इस प्रकार हरिताल शुद्ध होता है ।

अथ हरितालके गुण ।

शुद्धमारित हरिताल विष कंडू कुष्ठ मुख-रोग रक्तविकार कफ पित्त व्रण शीतज्वर इनको हरे और बल वीर्य्य कान्ति आयु बढावे ।

अथ हरिताल मारण विधि ।

हरताल २ तोले लेकर गोमूत्रमें ८ प्रहर भिजोवे फिर गोमूत्र थूहर दूध सहदेवी रस आकका दूध राईका रस चिरचिराका रस कुमारीका रस बकरीदूध नकछिकनीका रस निंबूका रस वडका दूध इन ११ औषधों-में पृथक् २तीन२दिन खरल करे फिर चंदि-या बांधि ७ दिन छायामें सुकावे फिर मोटी हांडी मंगाय७कपरौटी कर उसमें पीपलकी राख भरे तिसके बीचमें चोखे भोडलके२पत्र मंगाय उनके बीच उस चंदियाको धरि ऊप-

रसे उसी राखको हाथसे दबाय भरे फिर हं-
डीके मुंहपर खपरिया(चपनी) धरके वज्रमु-
द्राकरे फिर बडे चूल्हेपर चढाय ३२ प्रहरकी
आग दे पहिले दीपककीसी आग दो प्रहर
तक दे फिर मसालकीसी आंच दे ४ प्रहर
खिचरीकीसी आंच छः प्रहर वेगनकीसी आं-
च दे १२ प्रहर दीपककीसी आंच दे ८ प्रहर
फिर जब स्वांग शीतल हो तब उतारे मात्रा
२ चावल पानके साथ खाय तो सब कुष्ठ दूर
होय चतुर्थ ज्वर फिरंग इनकोभी दूर करे ।

अथ दूसरी विधि २।

तोला १ हरितालकी डली लेकर ७ तोले
फिटकरी ले हरितालके नीचे और ऊपर डार
कूजेमें दृढ संपुटकर २ सेर पक्के अरनेकी
आग दे रंग सुपेद होगा मात्रा १ रत्ती ताप
जलोदर वातशूल नपुंसकता इनको अनु-
पानसे दूर करे

अथ तीसरी विधि ३ ।

पांच टंक हरितालको चूर्ण लेई वनाय।
धरि खपरामें नागको बारह टंक गलाय ॥
बारह टंक गलाय पिंगल जब सीसाआवे ।
तब चूरण हरिताल डारि करछीसे उसे
चलावे ॥ सरपुंखाके पानीको औटाकर पास
धरावे । जब वामें लांठा उठें तब वा जल
डार बुझावे ॥ बने सुंदर हरिताला । रत्तीभर
जो खाय वृद्ध भोगे शतबाला (स्त्री) ॥

अथ चौथी विधि ४ ।

शुद्ध हरिताल ले तिगुने आकके दूधमें
खरल करे फिर चौगुने पानीमें औटावे (उ-
बाले)जब आधा पानी रहे फिर उसमें खरल
कर हरितालसे आधी हफीम ले तिगुने पा-
नीमें भिगोवे फिर उसमें खरल करे फिर ह-
रितालसे ८ गुने कुमारके रसमें ८ गुने भंग-
के रसमें खरल कर छोटी २ टिकियां बनावे
धुपमें सुकाकर हांडीमें पलासकी राख

(भस्म) भर उसके बीच टिकियां रक्खे ऊप-रसे मुखमुद्रा कर १६ प्रहर आग दे और हां-डीकोभी कपरौटी करे जब शीत हो तब निकाले फिर आगपर डारकर देखे जो धूआं न दे तो बने यदि धूआं दे तो फिर पूर्वरीतिसे ८ प्रहर आग दे फिर शुद्धि होती है मात्रा १ रत्ती पानसे खावे पुष्टि हो बंधेजमें जायफल-से कच्ची हरितालके दोष दूर करनेको अ-कर्करेसे फिरंगमें मिश्रीसे वा पानसे खावे पथ्य दुग्ध चावल धातुक्षयमें मिश्रीसे खावे ११ दिन धातु पुष्ट हो स्त्रियोंसे भोग करे बवासीर (अर्श) में ३ मासे जौखार १ तोला पुराना गुड मिला खावे सर्व रोगोंमें अनुपा-नसे देवे ।

अथ पञ्चम विधि ५ ।

हरिताल १ पैसाभर ले तांबेकी डिबि-यामें भरे तिसमें छः पैसाभर बडे गोखरूका रस डारे बंद करि ऊपर कपरोटी करे फिर

राखमें गाडिके ऊपरसे आग जलावे और प्रातःकाल उखारि ले फिर उसमें निंबूका रस और आंवलासार गंधक डारि अग्निदे तो ह-रिताल मरे ।

अथ छठी विधि ६ ।

चोखा हरिताल ले निंबूके रसमें ३ दिन राखे चौथे दिन काढि टिकिया बनाय मटुकाके भीतर पेंदीमें धरे ऊपरसे सरवा औंधाय उसके चारों ओर फिटकरी बिछावे तिसके ऊपर मटुकाके मुंहतक वालु भरकर नीचे अग्नि जलावे जब ऊपरकी वालु गरम होय तब उतारे चाहे जिस काममें लावे ।

अथ सातवीं विधि ७ ।

हरितालको लेकर बेरीके पत्तोंके काढेमें ४ प्रहर स्वेदन करे फिर इसीके पत्तोंके गु-द्देमें धर संपुट कर १० सेर गोहेकी आग दे जब शीतल हो तब निकाले मात्रा १ रत्ती अनुपानसे यथारोग देवे ।

अथ आठवीं विधि ८।

हरिताल ले एक दिन आकके दूधमें एक दिन कुमारके रसमें ३ दिन पेठेके गुद्देके रसमें खरल करे फिर टिक्कियां बांध सुकावे फिर ढाककी राखमें वालुयन्त्रसें १६ प्रहर आग दे फिर ४ प्रहर पीछे शीतल होनेपर निकाले मात्रा १ रत्ती यथारोग अनुपानसे देवे ।

अथ हरितालके गुण ।

श्रीहरिताल गुणौघ बतावत चावल एक प्रमाण जो खावे। पानमें खात हरे सब व्याधि न दूध औ भातको भोजन पावे ॥ होय जो पुष्ट बने अति वीरज वीरज राखि समाधि लगावे ।और गुननकी गम्य नहीं पर जानत यह सभ रोग भगावे ॥ १ ॥

अथ पारा शोधन ।

यद्यपि पारेके स्वेदन आदि सोलह १६ संस्कार हैं परन्तु विस्तार होनेसे यहां संक्षेप शोधन लिखा है श्वेत पारा लेकर कांजीमें

दोलायन्त्रसे स्वेदन करे अथवा ईंट, चूना, दधि, गुड, सिंधानूण, राई, रसोईका धूआं इनमें मर्द्दन करे वा कुमार गंदल चित्रालाल सर्षप कण्डपाई इनके काढेमें मर्द्दन करे या त्रिफलाके रसमें ३ दिन मर्द्दन करे इस रीतिसे पारा शुद्ध होता है और अशुद्ध पारा कुष्ठ आदि महारोग करता है शुद्ध मरा हुआ कुष्ठ आदि रोगोंको दूर करे, स्मृति ओज बल वीर्य्य आयु बढावे और यह योगवाही है अनुपानसे सभ रोगोंको दूर करता है यह रसराज है ।

अथ मारण ।

पारा ७ तोले गन्धक ७ तोले सोनामक्खी ७ तोले इन तीनोंको इकट्ठेकर निंबूके रसमें खरल करे फिर आतसी सीसीमें भर वालुयंत्रसे ८ प्रहर आग दे फिर उतारि गन्धक २४ मासे राई ७ तोले डारि ४ दिन खरल करे फिर दूसरी सीसीमें डारि वालु

यन्त्रसे आंच दे७दिन शीतल होय तब उतारे मात्रा १ चावल अनुपान, पान, भूख बहुत करे ऐसी विधिसे ७ शीसियोंमें भरे तो बहुत भूख लगावे ।

अथ द्वितीय विधि २ ।

पारा १ तोला कलई डेढ तोला सर्षपका तेल ४ तोले प्रथम लोहेके कडछेको आग-पर धर पारा पावे ऊपरसे तेल पावे फिर कली पावे जब मिलकर डली हो जावे तब उतारे फिर पाव कच्ची तेजवलकी त्वचाका चूर्णकर डलीके नीचे ऊपर दे फिर श्वेतवस्त्र खण्डोंमें लपेट दो पाथियोंमें आग दे जब शीतल हो तब धीरेसे भस्म उतारे पारा फूल जाता है और कली कच्ची रहती है रंग सुपेद होगा मात्रा १ रत्ती ।

अथ तीसरी विधि ३ ।

पारा ३ तोले गन्धक आवलेसार३ तोले इनको ३ दिन खरल कजली बनावे फिर २

ईंट ले, एकमें गर्त्त (गढा) कर कजली पावे फिर दूसरी ईंटको घिसाकर बराबर कर उसके ऊपर दे और पारेको इस प्रकार करे बारीक कपरा ले उसपर तेलिये मिट्टेको पानीमें रगड लेप करे फिर उसमें पारा बांवे फिर काले धतूरेके बीज पीस कर पारेकी ग्रन्थि (गांठ) के नीचे ऊपर दे दोनों ईंटोंके बीचमें धर मिट्टीसे लेप करे फिर गर्त्त (गढा) में गाडे ऊपरकी ईंटको बाहर रक्खे फिर वनके(कंडे) गोहेकी आग दे ३ दिन शीतल होनेसे निकाले मात्रा १ रत्ती इसे रससिन्दूरभी कहते हैं ।

अथ चौथी विधि ४ ।

पारेको एक प्रहर गुल्लरके दूधमें खरल कर गोली बनावे फिर गुल्लर दूधमें हिंगको घिसाकर २ मूसी (घरिया) बनावे फिर उनमें पारेकी गोलीको खामकर सुकावे फिर १ सेर उपलेकी भूभलमें पकावे पकानेकी

यह क्रिया कोरा ठीकरा लेकर उसमें भूभल-
कों डारि पारेकी गोलीको आधी नीचे ऊपर
देकर ऊपरसे किसी भांडेसे दबाकर नीचे
आग जलावे जब देखे कि अब भूभल अच्छी
तरहसे गरम हो गई है तब अग्नि बन्द कर
दे जब अच्छी तरह शीतल हो जावे तब उ-
तारे पारा सुपेद खील हो जावेगा अथवा १
सेर वस्त्र खण्डों (लीर)लपेट आग दे तबभी
अच्छा बने ।

अथ सिंगरिफ शोधन ।

चौखा चमकदार सिंगरिफ ले ७ पुट
निंबू आदि खटाईके रसकी दे फिर ७ पुट
भेडके दूधकी दे तब शुद्ध हो ।

अथ गुण ।

शुद्ध मरा हुआ सिंगरिफ ले पारेके समा-
न गुण करता है और दोषभी इसमें पारेके
समान है क्योंकि यह उपरस है और इससे
निकाला हुआ पाराभी शुद्ध होता है और

यह सिंगरिफ कसैला है और कटुभी है और नेत्ररोग कफ पित्त चित्तका उछलना, कंडू ज्वर, पीलिया तिल्ली आमवात इनको दूर करता है ।

अथ मारण ।

एक छटांक सिंगरिफ ले ठीकरेमें डारि नीचे आग दे और ऊपरसे आकका दूध १ सेर कण्डपाईका रस १ सेर धतूरेका रस १ सेर पित्तपापडेका रस १ सेर यह सब जुदे २ डार सुकावे फिर शीतल होनेपर सुकावे बहुत अच्छा बने मात्रा १ चावल बल बहुत करे वाईको नाश करे अनुपानसे सब रोगों-पर चले ।

अथ दूसरी विधि २ ।

सिंगरिफ एक छटांक ले एकसेर भलावे एक सेर सहत एक सेर गौका घृत तीनों चीजें मिलावे भलावोंको कूट ले फिर इनको डेगमें रक्खे फिर लोहेकी तारोंका छिक

बनावे उसमें ठूठी रख बीच सिंगरिफ डारि डेगमें लटकावे ऊपरसे मुंह बंद करे १ २ प्रहर आग दे धूंआं निकलने न दे शीत होनेसे उतारे मोम जैसा होगा मात्रा १ चावल कुष्ठ आदि रोगोंको दूर करता है शरदऋतुमें खावे ।

अथ तीसरी विधि ३ ।

अच्छे सिंगरिफकी ४ तोले भरकी डली लेकर कडछेमें चढाकर नीचे आग दे ऊपर एक पावभर निंबूका रस डारि सुकावे पीछेसे ५ सेर प्याजका जल सुकावे फिर इस डलीको निकाल और कडछेमें धर नीचे ऊपर एक पावभर प्याजकी नुगदी देकर पकावे फिर इस डलीको जुदी काढे फिर एक पावभर कुचला १ पावभर राई १ पावभर मालकंगणी १ सेर प्याज १ सेर घृत १ सेर सहत इन सबको महीन पीस एक नुगदा कर कडाहीमें धरे बीचमें सिंगरिफकी डली पावे८

प्रहर आग जलावे शीतल होनेसे उतारकर डलीको निकासे मात्रा आध रत्ती या रत्ती पानके साथ खाय नामर्द मर्द होय और सब रोगोंपर चले।

अथ चौथी विधि ४ ।

सिंगरफकी डली करके मासे ६ भर एक २ सरन्दी बताऊंमें पाकर कपरोटी कर आगमें भुरता करे लाल होनेसे निकास ले इस प्रकार ११ पुट दे फिर ११ पुट धतूरेके फलोंमें दे फिर अच्छा बने मात्रा आधरत्ती।

इस ग्रन्थमें जिस २ वस्तुके जो २ प्रकार आये हैं सो अच्छे सिद्धान्तग्रन्थोंमें देखकर और अच्छे महात्मा वैद्योंसे सुनकर और आपभी अनुभव करके लिखे हैं चतुराईपूर्वक बनानेसे सब ठीक बनते हैं विना बुद्धिके तृण तोडनेमेंभी काटा लगता है इसमें धातु, उपधातुओंकाही शोधन मारण लिखा है यद्यपि विष, उपविष, रत्न, उपरत्न, उपरसभी बहुत चीजें ग्रन्थोंमें लिखी हैं परन्तु मैंने उनको ग्रंथके बहुत बढ जानेके भयसे छोड दिया।

और धातुओंकेभी बहुत प्रकार ग्रंथोंमें हैं परन्तु थोडे यत्नसे जो बन जावे और गुण अच्छा करे उन्हकोही मैंने लिखा है.

इति श्रीमत् वैद्यराजदिलेरामसूरिभ्रातृज श्रीकृष्णशास्त्रिनिर्मित चिकित्साधातुसारः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना.
कल्याण–मुंबई.

जाहिरात.

लघुसिद्धांत कौमुदी भा० टी०	...	२-०
संवत्सरफलदीपिका	....	०-३
मासचिंतामणि भाषाटीका	....	०-३
श्राद्धविधान भाषाटीका	... ...	०-६
मसिसागर (शाईबनानेकी पु०)	...	०-२
वियोगवैराग्यशतक	... ...	०-१
रसिकरहस्य	....	०-३
बृहत्संहिता भा०टी० ग्लेज० ४ रु० रफ्		३-८
गीतामृतधारा	... ...	०-८
भजनरसमाल	... ...	०-५
भोजप्रबंध भा० टी०	... ...	१-४
अनेकसंग्रह २ भाग	... ...	२-०
तर्कसंग्रह भा० टी०	... ...	०-६
हरिवंश भा० टी० ग्लेज १० रु० । रफ् ९ रु०		
केवल भाषा वार्तिक ग्लेज ५ रु० । रफ् ४ रु०		
अनेकसंग्रह भाषा	... ...	२-०
भोजप्रबंध भा० टी०	... ...	१-४
भोजप्रबंध भाषा	... .	०-१२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण—मुंबई.